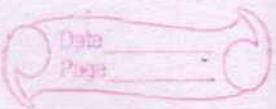




पाठ्यक्रम के उद्देश्यः — इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम
के मुख्य लक्षित उद्देश्य हैं

1. **सांस्कृतिक धरोहरः** — हात - हालाएँ अपनी सांस्कृतिक
धरोहर समझे तथा उत्तम
निष्ठा रखें। भारतीय संस्कृत में वार पुरुषाथो—
दामि, अर्थ, काम और मोक्ष को बहुत ऊँचा स्थान
दिया गया है।
2. **ज्ञान और कुशलता** :- बालक - बालिकाओं में
उनकी योग्यता, क्षमता तथा
सभी के अनुसार ज्ञान और विभिन्न कुशलताओं
का विकास करना।
3. **वारितः** — विद्यार्थियों का व्याकुंठात् रुपं राखीय
वारित दोनों का विकास करना।
4. **स्वास्थ्यः** — बालकों तथा बालिकाओं की स्वस्थ
रखना। स्वास्थ्य में मानसिक रुपं
शारीरिक दोनों प्रकार का स्वास्थ्य आ जाता है।
5. **नागरिकता** :- हात - हालाओं की उत्तम नागरिक
बनाना जिससे कि वे अपने गतियों
और अधिकारों की समझ सकें।
6. **भावनात्मक विकास** :- बालक - बालिकाओं का
भावनात्मक विकास
करना ताकि वह जीवन के सुन्दर पक्ष का दर्शन
कर सकें।
7. **रुपरूप चिन्तन शक्ति का विकास** :- विद्यार्थियों
में रुपरूप
चिन्तन तथा विकेन्द्रिय का विकास करना
जिससे वे सत्य तथा असत्य की पहचान पर
सकें।

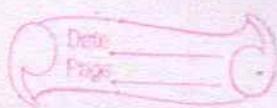


8. सामाजिक आवना का विनासः - विद्यालयों
की भैं-न कार्य

- कमों हारा बालकों तथा कृपाओं में सामाजिक
या स्तामूलिक आवना का विनास करना ताकि
व्याकरण इवाई से उत्पन्न शुद्ध सामाजिक
या राष्ट्रीय हाई से सोच सकें।

9. सोन्दर्यानुभूति खंड अधिव्याकरणः - बालकों
में सुन्दर
के उपयोग के लिए सो-इर्यानुभूति तथा सूखे
- मक अधिव्याकरणों का विनास करना।

प्राचार्य
मीरा भेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
घासेडेपुर, ताप्या, बलिया



पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त : -

[Principles of Curriculum Construction]

पाठ्यक्रम निर्माण हेतु प्रमुख सिद्धान्त
निम्नलिखित हैं —

1. **उपयोगिता का सिद्धान्त :-** पाठ्यक्रम में लिन
विषयों की महत्वपूर्ण
स्थान दिया जायें, वह बालक के भावी जीवन
हेतु उपयोगी होने चाहिए। इस समझदृष्टि में
भन ने लिखा है, "साधारण मनुष्य सामाजिक
थह चाहता है कि उसके बचे
के बाल के प्रदर्शन के लिए कुछ बातें सीखें
परन्तु समग्र में वह चाहता है कि उनको वे
बी बातें सीखाई जायें जो भावी जीवन में उन्हें
लिए उपयोगी हों।"

2. **रचनात्मक कार्य का सिद्धान्त :-** पाठ्यक्रम ऐसा
होना चाहिए
जो बालक की रचनात्मक शाक्ति के विकास
हेतु प्रेरित करें, इमान्द के राज्यों में जो

पाठ्यक्रम

वर्तमान और भवित्व की अवश्यकता के उद्देश्य
हैं; उसमें निश्चिप्त स्पष्ट से रचनात्मक विषयों
के द्वारा उद्घाट दीने चाहिए।"
शिवों का इसे अवसर अवश्य दीने चाहिए जो
बालक की रचनात्मक शाक्ति का विकास कर
सकें।

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पांडेयपुर, ताखा, बलिया

3. जीवन से सम्बन्धित होने का सिठान्तः -

पाठ्यक्रम में निहित विषय त्रैसे होना चाहिए जो हालों की जीवन के समीप ने जारी, उसमें उन सभी क्रियाओं के सम्मिलित किया जाना चाहिए जो प्रत्येक व्यालक के जीवन के विभिन्न पक्षों पर आधारित हो। पाठ्यक्रम दृग्मीनदी होना चाहिए।

4. खेल व कार्य की क्रियाओं के अन्तर्लिंग-घटना सिठान्तः -

कीरणों के अनुसार, जो लोक सीखते हैं

प्राकृतिकों की निरूपित करते हैं, उनका उद्देश्य यह होना चाहिए कि वे शान्तिमुद्देश्य क्रियाओं की ऐसी योजना बनाये जिसमें खेल वे डालिकोण के स्थान पाए हो सकें।

पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय हमें खेल की गतिविधियों की भी उसमें सम्मिलित करना चाहिए जिससे वे पाठ्यक्रम संचिपुर्ण हो सके परन्तु हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि खेल की गतिविधियों तभी साधन होंगी।

5. क्रिया का सिठान्तः - पाठ्यक्रम इस प्रकार

कि होना चाहिए जो व्यालक को क्रिया करने हेतु प्रेरित करे। इसमें व्यालक के मास्टिष्क, हड्डियाँ आदि की क्रिया-शील बनाया जाना चाहिए, साथ ही साथ 'करके सीखने' पर व्यालक इसका जाना चाहिए।

प्राचार्य

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्कार
पाण्डेयपुर, ताङा, बङ्गलादेश

6. अनुभवों की दृष्टिकोण का सिठान्तः - पठ्यक्रम के अन्तर्गत हैं

उन सभी अनुभवों को सामिलित करना चाहिए जो बालक समाज में इकर विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से प्राप्त करता है। पठ्यक्रम का सम्बन्ध केवल छेड़ान्तर क्रियाओं से नहीं है वरन् उसमें उन सभी अनुभवों को सम्मिलित किया जाता है। माध्यांकिक शिक्षा आयोग के उन सारे 'पठ्यक्रम' का अर्थ, केवल छेड़ान्तर क्रियाओं से नहीं लिया जाता है वरन् इसमें अनुभवों की दृष्टिकोणित होती है।

7. खेल आंचरण के आदर्शों की प्राप्ति का सिठान्तः - पठ्यक्रम में उन क्रियों एवं क्रियाओं की महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए जो बालक की अचूक चारित का प्रशिक्षण देसके। शिक्षा का महत्वपूर्ण हृत्यु दातों का चारितपान बनाना है और शिक्षा अपने इस उत्तेजना की दृष्टि पठ्यक्रम के माध्यम से नहीं है।

8. सहस्रबंध का सिठान्तः - पठ्यक्रम के क्रियों का

आदर्शविभिन्न अद्यापकों के द्वारा उत्तीर्ण की दृष्टिकोण के बराबर, जाना चाहिए कि एक क्रिया से दूसरे क्रिया का सम्बन्ध किया जा सके। एक शान आजित करते समय विभिन्न क्रियों के माध्यमाल में भ फँसाकर उनमें रक्षणप्रता स्थापित करने का प्रयास करें।

9. ऐयाक्टिक मिनता का सिठातः - शिखा गैगा

कृनेवाला

बालक अपनी जिली इच्छा की दूरी पाठ्यक्रम
के लिए करता है। अतः बालक ने 'स्पष्ट'
सम्बन्धी आवश्यकताओं व इच्छाओं की दृष्टि
शिखा डार द्वारा पाइए।

10. समय का सिठातः - प्रक्षी भी विलय या

स्तर के पाठ्यक्रम

का निम्नों वर्ते समय हमें अद्यता द्यान
रखना चाहिए कि इसे पढ़ने हेतु हमारे पास
कितना समय है। समय की यह ध्यान में नहीं
रखा गया तो दो प्रेरणाएँ होंगी या तो पाठ्यक्रम
दूरी नहीं हो पा कर्गा या किर पाठ्यक्रम
समय से दूरी समाप्त हो जाएगा।

~~21.10.20~~

प्राचार्य
मीरा बेनोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पांडेयपुर, ताखा, बलिया